उदासीन: कामन्दक का सुपरपावर सिद्धांत

(Udasin: Kamandak Superpower Theory)

लेखक: *Anand Singh Dhami*

प्रस्तुतकर्ता: *Indian Philosophy & Ethics*

विषय क्षेत्र: *Geopolitics, Ancient Indian Wisdom, Foreign Policy, Kamandaki Neeti, mandala theory, Udaseena, Superpowers, International Relations, Strategy, Realpolitik, India's Foreign Policy, kaamandakiy Neeti*

संक्षिप्त परिचय:- *कामन्दक का उदासीन सिद्धांत समझिए। 1800 साल पुराने इस सिद्धांत में आज की भू-राजनीति की चाबी छुपी है। जानिए कैसे खाड़ी युद्ध, वेनेजुएला संकट और आधुनिक संघर्षों में यह सिद्धांत खुद को साबित करता है।*

🔗 ऑनलाइन विस्तृत लेख: -

https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/01/kamandaka-udaseena-superpower-theory-modern-geopolitics.html

© Indian Philosophy & Ethics | Educational & Research Use

उदासीन: कामन्दक का सुपरपावर सिद्धांत

1.प्रस्तावना: वह तीसरा जो इंतजार कर रहा है
कल्पना कीजिए, एक मैदान में दो घोर शत्रु लड़ रहे हैं। धूल उड़ रही है, तलवारों की झनकार गूंज रही है। दोनों अपनी पूरी ताकत, अपनी पूरी सेना इस लड़ाई में झोंक चुके हैं। यह लड़ाई उनके लिए जीवन मरण का सवाल है। लेकिन इस मैदान से बहुत दूर, एक ऊंचे पहाड़ पर बना एक महल है। वहाँ एक शक्तिशाली राजा शांति से बैठा है, और अपनी खिड़की से इस पूरे युद्ध को एक तमाशे की तरह देख रहा है। उसे न तो किसी एक की जीत से प्रेम है, न हार से दुख। वह बस इंतज़ार कर रहा है। इंतज़ार इस बात का कि जब ये दोनों योद्धा एक-दूसरे को कमजोर करके थक जाएंगे, तब वह नीचे उतरेगा और दोनों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेगा।

यह कोई काल्पनिक कहानी नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति और शक्ति संघर्ष का कठोर सत्य है। और आश्चर्यजनक रूप से इस सत्य को हमारे एक प्राचीन भारतीय आचार्य ने लगभग 1800 वर्ष पहले ही पहचान लिया था और उसका नामकरण कर दिया था; '**उदासीन**'।
हमारी पिछली चर्चा में हमने आचार्य कामन्दक के '**मध्यमा**' राज्य के बारे में जाना था; वह पड़ोसी जो आप और आपके शत्रु के ठीक बीच में बैठकर आप दोनों को नियंत्रित करने की शक्ति रखता है। लेकिन आज हम उससे भी एक कदम आगे बढ़ने वाले हैं। कामन्दक हमें चेतावनी देते हैं कि मध्यमा से भी बड़ा, अधिक शक्तिशाली और अधिक खतरनाक कोई होता है, और वह है '***उदासीन***। यह वह खिलाड़ी है जो मैदान में नहीं, बल्कि मैदान के बाहर बैठा है, लेकिन पूरे खेल के परिणाम पर उसकी पकड़ सबसे मजबूत है।

आज का यह लेख सिर्फ एक प्राचीन श्लोक की व्याख्या नहीं है। यह एक ऐसी कुंजी है जो आज के जटिल भू-राजनीतिक समीकरणों, जैसे **अमेरिका-चीन** का प्रतिस्पर्धा, **रूस-यूक्रेन युद्ध**, या **वेनेजुएला के संकट** को समझने में हमारी मदद करती है। कामन्दक का '**उदासीन**' सिद्धांत बताता है कि कैसे कोई सुपरपावर दूर बैठकर भी दुनिया भर के छोटे-बड़े संघर्षों को नियंत्रित करता है। तो आइए, इस 1800 साल पुरानी, किंतु आज भी पूरी तरह प्रासंगिक, राजनीतिक दूरदर्शिता में गहराई से उतरते हैं।

2. उदासीन कौन है? श्लोक, शब्दार्थ और भावार्थ

कामन्दकीय नीतिसार के अध्याय 8, श्लोक 19 में उदासीन की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। यह श्लोक न सिर्फ उदासीन की पहचान बताता है, बल्कि उससे व्यवहार करने का तरीका भी सिखाता है।

श्लोक:
मण्डलत्वे हि चैतेपामुदासीनो बलाधिकः ।
अनुग्रहे संहतानां ध्वस्तानाञ्च वधे प्रभुः ॥ (कामन्दकीय नीतिसार 8.19)

शब्दार्थ:
- मण्डलत्वे च एतेपाम्: इस पूरे मंडल (राज्यों के समूह) में
- उदासीनः बलाधिकः: उदासीन (तटस्थ) राज्य सबसे ज्यादा ताकतवर होता है
- संहतानां अनुग्रहे: (तुम) एकजुट/मजबूत रहो तो उसका अनुग्रह/समर्थन पाओगे
- ध्वस्तानां च वधे प्रभुः: (लेकिन) बिखरे/कमजोर पड़े तो वह तुम्हारा वध करने में सक्षम है

भावार्थ:
कामन्दक का संदेश स्पष्ट और कठोर है। वे कहते हैं कि राज्यों के पूरे चक्र (मंडल) में सबसे अधिक शक्तिशाली वह राज्य होता है जो तटस्थ रहता हुआ भी दूर से सब कुछ देख रहा होता है; वह है **उदासीन**। यदि आप और आपका प्रतिद्वंद्वी मजबूत हो और एकजुट रहने की स्थिति में हो, तो यह उदासीन तुम पर अनुग्रह (अनुकूलता) दिखाएगा। लेकिन, यही अनुग्रह एक झूठी सुरक्षा की भावना दे सकता है। असली खतरा तब आता है; जब तुम आंतरिक कलह या बाहरी युद्ध में कमजोर पड़ जाते हो। उस स्थिति में यही उदासीन, जिसे आप ने एक तटस्थ दर्शक समझ रखा था, आप पर हावी होने और आप को समाप्त करने के लिए आ धमकेगा। उसकी शक्ति ही उसे यह अधिकार देती है।

3. मध्यमा और उदासीन में मुख्य अंतर
मध्यमा और उदासीन दोनों ही मंडल सिद्धांत के शक्तिशाली स्तंभ हैं, लेकिन इनकी भूमिका, स्थिति और खतरे का स्तर बिल्कुल अलग है। इसे समझना आज के वैश्विक शक्ति संतुलन को पढ़ने के लिए जरूरी है। सरल शब्दों में, मध्यमा वह है जो युद्ध को नियंत्रित करने की कोशिश करता है, जबकि उदासीन वह है जो युद्ध के परिणाम को नियंत्रित करता है।

- मध्यमा आपके ठीक बगल में बैठा एक मजबूत पड़ोसी है, जिसकी नजर हमेशा आप और आपके दुश्मन पर रहती है।
- उदासीन आपके पूरे क्षेत्र (मंडल) से बाहर, बहुत दूर बैठा एक सर्वशक्तिमान सत्ता है, जिसकी दिलचस्पी आपकी दैनिक झड़पों से कम, बल्कि पूरे क्षेत्र पर अंतिम नियंत्रण से है।

नीचे दी गई तालिका इन अंतरों को और स्पष्ट करेगी:

तुलना का आधार	**मध्यमा राज्य**	**उदासीन राज्य**
दूरी एवं स्थान	अरी (शत्रु) और विजिगीषु के ठीक बीच में स्थित।	मंडल (राज्यों के समूह) से बहुत दूर स्थित।
शक्ति का स्रोत	सामरिक स्थिति और पड़ोसी राज्यों से अधिक सैन्य बल।	अतुलनीय सैन्य, आर्थिक और राजनीतिक संसाधन (सुपरपावर)।
मुख्य रणनीति	दोनों पक्षों को आपस में लड़ाकर या सुलह कराकर लाभ उठाना।	दूर रहकर दोनों पक्षों को लड़ने देना, और थकने पर हस्तक्षेप कर अधिकार जमाना।
खतरे का प्रकार	प्रत्यक्ष, तत्काल, स्थानीय।	अप्रत्यक्ष, दीर्घकालिक, वैश्विक।
उदाहरण (प्राचीन)	मगध साम्राज्य के लिए उसके पड़ोसी राज्य।	दूर स्थित कोई विशाल साम्राज्य जैसे रोम या चीन।
उदाहरण (आधुनिक)	भारत के लिए पाकिस्तान या चीन (क्षेत्रीय स्तर पर)	भारत के लिए दूरस्थ सुपरपावर के रूप में अमेरिका।

4. उदासीन से निपटने की कामन्दकीय रणनीति
उदासीन को समझना ही काफी नहीं है, उससे बचे रहने और फलने-फूलने की रणनीति भी जरूरी है। कामन्दक यहाँ एक व्यावहारिक राजनेता की तरह स्पष्ट निर्देश देते हैं। वे बताते हैं कि, उदासीन कभी भी स्थायी मित्रता या शत्रुता के आधार पर नहीं चलता। उसका एकमात्र धर्म उसका राष्ट्रीय हित है।

इसलिए, उससे निपटने का तरीका भावनात्मक नहीं, बल्कि अत्यंत यथार्थवादी और गणनापूर्ण होना चाहिए।

1. **अपनी एकजुटता और शक्ति बनाए रखें**: यह सबसे महत्वपूर्ण नियम है। कामन्दक कहते हैं, "**संहतानां अनुग्रहे**"। यानी, जब तक आप मजबूत और एकजुट हैं, उदासीन आपकी उपेक्षा नहीं कर सकता, बल्कि आपको लाभ पहुंचाने का प्रयास भी करेगा ताकि आप उसके प्रति अनुकूल बने रहें। इसका मतलब है आंतरिक सामाजिक-आर्थिक सुदृढ़ता और बाह्य सैन्य सामर्थ्य पर निरंतर काम करते रहना।
2. **कमजोरी कभी न दिखाएं: "ध्वस्तानां च वधे प्रभुः"** यह चेतावनी है। यदि आप आपसी कलह, आर्थिक संकट या लंबे युद्ध में कमजोर पड़ते हैं, तो उदासीन के लिए आप एक आसान शिकार बन जाते हैं। वह 'स्थिरता' या 'मानवाधिकार' के नाम पर हस्तक्षेप करके आप पर अपना प्रभाव स्थापित कर सकता है।
3. **सीधी चुनौती से बचें, कूटनीतिक संबंध बनाए रखें:** उदासीन को सीधे चुनौती देना आत्मघाती है। कामन्दक के अनुसार, जब आप मजबूत हैं तब भी उसे विनम्रता और उपहारों (जो आज के संदर्भ में व्यापार समझौते, तकनीकी सहयोग आदि हो सकते हैं) के माध्यम से प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिए। यह उसके हस्तक्षेप की संभावना को कम करता है।
4. **पूर्वानुमानित हमले का सामना:** यदि आपको स्पष्ट संकेत मिलें कि उदासीन आपकी कमजोरी का फायदा उठाने की तैयारी कर रहा है, तो कामन्दक का सिद्धांत आक्रामक रुख अपनाने का भी समर्थन करता है। ऐसे में, उसकी योजना को विफल करने के लिए आवश्यक कूटनीतिक या सामरिक पहल करना बुद्धिमानी हो सकती है।

5. आधुनिक विश्व राजनीति में उदासीन के उदाहरण

कामन्दक का सिद्धांत कोई दार्शनिक कल्पना नहीं, बल्कि एक ऐसा ढांचा है जो आज के हर बड़े अंतरराष्ट्रीय संघर्ष पर सटीक बैठता है। आइए कुछ ठोस उदाहरणों से इसे समझते हैं।

5.1. 1991 का खाड़ी युद्ध (गल्फ वॉर)

- **स्थिति**: इराक (सद्दाम हुसैन) और कुवैत के बीच युद्ध। इराक ने कुवैत पर कब्जा कर लिया।
- **उदासीन की भूमिका**: संयुक्त राज्य अमेरिका, जो उस क्षेत्र से हजारों मील दूर स्थित एक सुपरपावर था।
- **क्या हुआ**: जब इराक कुवैत पर काबिज हो गया और क्षेत्र अस्त-व्यस्त हुआ, अमेरिका ने 'अंतर्राष्ट्रीय कानून' और 'तेल बाजार की स्थिरता' के नाम पर एक विशाल गठबंधन बनाकर हस्तक्षेप किया। उसने इराक को कुवैत से खदेड़ दिया, लेकिन साथ ही खाड़ी क्षेत्र में अपनी स्थायी सैन्य उपस्थिति भी मजबूत कर ली। एक कमजोर पड़े हुए इराक और अशांत क्षेत्र पर उदासीन (अमेरिका) का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

5.2. 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध

- **स्थिति**: भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध, जिसके केंद्र में था बांग्लादेश का उदय।
- **उदासीन की भूमिका**: शीत युद्ध के दौर के दो सुपरपावर **संयुक्त राज्य अमेरिका** और **सोवियत संघ**।
- **क्या हुआ**: अमेरिका, जो पाकिस्तान के साथ गठजोड़ में था, ने भारत पर दबाव बनाने के लिए बंगाल की खाड़ी में अपना यूएसएस एंटरप्राइज विमानवाहक पोत भेज दिया। यह एक उदासीन शक्ति द्वारा दूर से सीधे सैन्य धमकी देकर युद्ध के परिणाम को प्रभावित करने का शुद्ध उदाहरण था। वहीं, दूसरी उदासीन शक्ति सोवियत संघ ने भारत के साथ मित्रता संधि का इस्तेमाल करके अमेरिका के दबाव को संतुलित किया।

5.3. इजरायल-ईरान टकराव और आज का मध्य-पूर्व
स्थिति: इजरायल और ईरान के बीच चल रहा प्रतिस्पर्धा और प्रॉक्सी वॉर (सीरिया, लेबनान आदि के माध्यम से)।
उदासीन की भूमिका: संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन।
क्या हो रहा है: अमेरिका इजरायल का स्थायी सहयोगी है, लेकिन वह सीधे ईरान से युद्ध में नहीं उतरता। वह दूर बैठकर इजरायल को सैन्य व तकनीकी सहायता देता है, ताकि वह ईरान को संतुलित रख सके। दूसरी ओर, चीन ईरान के साथ मजबूत आर्थिक संबंध बनाकर, बिना सीधे उलझे, क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। दोनों ही उदासीन शक्तियाँ हैं जो सीधी लड़ाई लड़े बिना ही पूरे संघर्ष की दिशा तय कर रही हैं।

5.4 श्रीलंका आर्थिक संकट (2022)

- **स्थिति**: श्रीलंका घोर आर्थिक संकट में फंसा, देश दिवालियेपन के कगार पर।
- **उदासीन की भूमिका**: भारत (क्षेत्रीय शक्ति के रूप में) और चीन (वैश्विक शक्ति के रूप में)।
- **क्या हुआ**: श्रीलंका की कमजोरी (ध्वस्तानां) का लाभ उठाने के लिए दोनों उदासीन शक्तियाँ सक्रिय हुईं। भारत ने '**नेबरहुड फर्स्ट**' नीति के तहत राहत सामग्री और वित्तीय सहायता देकर अपनी सद्भावना और प्रभाव बढ़ाया। वहीं, चीन, जिस पर श्रीलंका का भारी कर्ज था, ने अपनी ऋण-जाल (डेट ट्रैप) कूटनीति के माध्यम से श्रीलंका की अर्थव्यवस्था और रणनीतिक संपत्तियों (जैसे हंबन्टोटा बंदरगाह) पर अपना दावा मजबूत किया। यहाँ, एक कमजोर राष्ट्र दो उदासीन शक्तियों के बीच का मोहरा बन गया।

5.5 वेनेजुएला संकट: दो उदासीनों की टक्कर का मैदान

- **स्थिति**: वेनेजुएला में निकोलस मादुरो की सरकार और विपक्षी नेता जुआन गुआइदो के बीच सत्ता संघर्ष। देश गहन आर्थिक संकट, अतिशय मुद्रास्फीति और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा है।
- **उदासीनों की भूमिका**: संयुक्त राज्य अमेरिका (विपक्ष को समर्थन) और रूस-चीन गठजोड़ (मादुरो सरकार को समर्थन)।
- **कामन्दकीय विश्लेषण**: यह शुद्ध '**उदासीन**' की भूमिका का उदाहरण है, जहाँ दो वैश्विक शक्ति गठजोड़ **दूर से** एक छोटे, कमजोर राष्ट्र के आंतरिक संघर्ष में हस्तक्षेप कर रहे हैं। उनकी असली लड़ाई वेनेजुएला से नहीं, बल्कि **लैटिन अमेरिका में अपना प्रभाव क्षेत्र बनाए रखने** की है।
- "**संहतानां अनुग्रहे**": जब वेनेजुएला मजबूत और समृद्ध था (तेल के दाम ऊंचे थे), तब भी इन शक्तियों ने अपने-अपने हित के अनुरूप संबंध बनाए।
- **"ध्वस्तानां च वधे प्रभुः"**: अब जब वेनेजुएला आंतरिक विभाजन और आर्थिक पतन ("ध्वस्त") की स्थिति में है, दोनों उदासीन शक्तियाँ अपने-अपने पक्ष को बचाकर या बढ़ाकर देश पर अपना आधिपत्य जमाने में सक्षम ("प्रभुः") हैं। वेनेजुएला स्वयं एक **रणनीतिक शिकार** बन गया है।

6. उदासीन सिद्धांत का सार्वकालिक महत्व

कामन्दक का यह सिद्धांत केवल इतिहास या राजनीति शास्त्र का एक पाठ नहीं है। यह मानवीय संघर्ष और शक्ति के गतिशील समीकरण का एक सार्वभौमिक सत्य है, जिसकी प्रासंगिकता कभी कम नहीं होती।

- **शक्ति ही अंतिम सत्य है**: उदासीन सिद्धांत हमें यह कठोर सबक सिखाता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता या भावनाओं से अधिक, शुद्ध शक्ति और हितों का गणित काम करता है। उदासीन की '**तटस्थता**' उसकी शक्ति की मजबूरी है, नैतिकता नहीं।

- **हस्तक्षेप की भविष्यवाणी का मॉडल**: यह सिद्धांत एक ढांचा प्रदान करता है जिससे हम किसी भी क्षेत्रीय संघर्ष का विश्लेषण कर सकते हैं। यह पूछने से कि **"इसका उदासीन कौन है?"** हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कब और किस रूप में कोई बाहरी ताकत हस्तक्षेप करेगी।
- **कमजोरी आमंत्रण है**: यह राष्ट्रों के लिए एक सतत चेतावनी है कि आंतरिक एकता और सामर्थ्य सबसे बड़ी सुरक्षा है। कोई भी आंतरिक विभाजन या आर्थिक दुर्बलता उदासीन शक्तियों को आकर्षित करने वाला चुम्बक है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता की मांग**: उदासीन सिद्धांत यह समझाता है कि क्यों भारत जैसे देश "**रणनीतिक स्वायत्तता**" पर इतना जोर देते हैं। किसी एक उदासीन शक्ति पर पूर्ण निर्भरता, दीर्घकाल में, अपनी नीतियों पर उसके नियंत्रण को आमंत्रण दे सकती है।

7. आज के भारत के लिए सीख

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहां भारत एक उभरती हुई प्रमुख शक्ति है, उदासीन सिद्धांत की सीखें अत्यंत मूल्यवान हैं।

सावधानीपूर्ण संतुलन: भारत के लिए अमेरिका, चीन और रूस अलग-अलग संदर्भों में, उदासीन की भूमिका में हैं। भारत की 'मल्टी-एलाइनमेंट' (बहुपक्षीय संरेखण) नीति – जिसमें वह QUAD जैसे समूहों में भी सहयोग करता है और ब्रिक्स/एससीओ जैसे समूहों में भी इसी कामन्दकीय चेतावनी का आधुनिक रूप है। यह किसी एक पर निर्भर नहीं होता।
आत्मनिर्भरता का महत्व: '**आत्मनिर्भर भारत**' की अवधारणा सिर्फ एक आर्थिक नारा नहीं, बल्कि उदासीन के खतरे से बचने की एक रणनीतिक आवश्यकता है। संकट के समय आवश्यक संसाधनों के लिए किसी बाहरी शक्ति पर निर्भर होना एक बड़ी कमजोरी साबित हो सकता है।
पड़ोस पहले, लेकिन सतर्कता से: भारत की **'नेबरहुड फर्स्ट'** नीति मध्यमा के प्रबंधन का हिस्सा है, लेकिन इसे लागू करते समय हमेशा यह ध्यान रखना होगा कि कहीं हमारे पड़ोस में उदासीन शक्तियों का प्रभाव बहुत अधिक तो नहीं बढ़ रहा, जो भविष्य में हमारे लिए खतरा बन सकता है।
शक्ति का संचय: अंत में, कामन्दक की सलाह सरल है: उदासीन से भयभीत न हों, बल्कि अपनी शक्ति आर्थिक, सैन्य, तकनीकी और कूटनीतिक इतनी बढ़ाएं कि वह आप पर हावी होने के लिए हस्तक्षेप करने से पहले सौ बार सोचे। शक्तिशाली और एकजुट राष्ट्र ही उदासीन की कृपा के पात्र बनते हैं, न कि उसके शिकार।

Udasin: Kamandaka's superpower theory, you can read in the blog post.

8. निष्कर्ष:

मंडल सिद्धांत की यात्रा में हमने देखा कि मध्यमा एक बड़ा खतरा है, क्योंकि वह हमारे बिल्कुल करीब है। लेकिन कामन्दक हमें एक और, अधिक गहरे और विस्तृत खतरे से आगाह करते हैं; उदासीन से। मध्यमा से तो हम सीधी बातचीत, गठबंधन या युद्ध के द्वारा निपट सकते हैं, क्योंकि वह पास है और उसकी शक्ति की सीमा हमारी समझ में है। लेकिन उदासीन बहुत दूर है, और उसकी शक्ति अक्सर हमारी कल्पना से परे होती है।

उदासीन से निपटने की रणनीति सूक्ष्म और दीर्घकालिक होनी चाहिए। इसमें सीधी टक्कर के बजाय संयम, कूटनीति, आंतरिक सुदृढ़ता और निरंतर सतर्कता की आवश्यकता होती है। कामन्दक का यह सिद्धांत, 1800 साल पहले लिखा गया, आज भी विश्व राजनीति के हर पन्ने पर स्पष्ट दिखाई देता है। **खाड़ी युद्ध से लेकर वेनेजुएला के संकट तक**, यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर नाटक के

मुख्य पात्रों पर नजर रखने के साथ-साथ, उस दूर बैठे निर्देशक को कभी नहीं भूलना चाहिए, जिसके हाथ में पूरे नाटक का अंत लिखने की कलम है। इस सिद्धांत को समझकर ही कोई रा दीर्घकालिक सुरक्षा और समृद्धि की राह पर चल सकता है।

9. अंतिम विचार

यह विडंबना ही है कि आज हम जिसे '**जियोपॉलिटिक्स**' या 'रि**यलपॉलिटिक**' का आधुनिक विज्ञान मानते हैं, उसकी मूलभूत समझ हमारे प्राचीन ग्रंथ सदियों पहले दे चुके हैं। नाम बदल जाते हैं; '**उदासीन**' आज '**सुपरपावर**' या "**हैग्मन**" कहलाता है; लेकिन शक्ति का खेल वही का वही रहता है।

10. आगे क्या करें?

अगर कामन्दक का यह मंडल सिद्धांत आपको राजनीति और रणनीति की दुनिया में गहरा उतारने के लिए प्रेरित करता है, तो यहाँ से आगे बढ़ें:

· पढ़ें: कामन्दकीय नीतिसार का हिंदी या अंग्रेजी अनुवाद अवश्य पढ़ें। साथ ही, आधुनिक भू-राजनीति को समझने के लिए टिम मार्शल की "**प्रिज़नर्स ऑफ ज्योग्राफी**" (भूगोल के बंदी) और ज़बिग्न्यू ब्रेज़िंस्की की "**द ग्रैंड चेसबोर्ड**" जैसी किताबें उत्कृष्ट हैं।

· सोचें: अगली बार कोई अंतरराष्ट्रीय खबर देखें या पढ़ें, तो अपने आप से पूछें: इस स्थिति में 'मध्यमा' कौन है? और 'उदासीन' की भूमिका कौन निभा रहा है? आप पाएंगे कि समाचारों को समझने की आपकी दृष्टि पहले से कहीं अधिक स्पष्ट हो गई है।

· शेयर करें & चर्चा करें: इस लेख को उन मित्रों और सहकर्मियों के साथ साझा करें जो इतिहास, राजनीति या रणनीति में रुचि रखते हैं। कमेंट में बताएं कि आपको कौन सा उदाहरण (खाड़ी युद्ध, वेनेजुएला, श्रीलंका, आदि) सबसे ज्यादा प्रासंगिक लगा।

11. References (संदर्भ)

1. कामन्दकीय नीतिसार
2. गल्फ वॉर (1990-91) – ब्रिटानिका: 1991 के खाड़ी युद्ध का विस्तृत इतिहास और भूमिका।
3.1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध और यूएसएस एंटरप्राइज
4. श्रीलंका का आर्थिक संकट और चीन का ऋण-जाल कूटनीति